हज़रत इमाम हसन अस्करी (अ०) पर अब्बासी हुकूमत के मज़ालिम और हज़रत की शहादत

मौलाना सै० मोहम्मद मुस्लिम नक़वी

हमारे ग्यारहवें इमाम हज़रत हसन अस्करी (अ०) **10**, रबी-उस-सानी **232** हिज्री को मदीनः-ए-मुनव्वरा में पैदा हुए और मोअ्तमद अब्बासी ख़लीफ़ा की क़ैद में **8** रबी-उल-अव्वल **260** हिज्री को सामरा में शहीद हुए।

अब्बासी हुकूमत ने इमाम पर मज़ालिम की इब्तिदा उस वक़्त से की जब आपका सिने शरीफ दो या तीन साल का था।

सबसे पहले मुतवक्किल अब्बासी ने इमाम को इमाम अली नक़ी (अ०) के हमराह क़ैद कर लिया और तरह तरह की अज़ीयतें देता रहा। जब मुतवक्किल अपने ठिकाने लगा तो आप मुन्तसिर बिल्लाह की हिरासत में रहे और उसके बाद मुस्तअीन बिल्लाह के मज़ालिम बरदाशत करते रहे मुस्तईन बिल्लाह अब्बासी ख़लीफ़ा के बाद मोअतज़् अब्बासी ख़लीफ़ा ने क़ैद करके अली बिन यारमश की क़ैद में दे दिया और हुक्म दिया कि सख़्त से सख़्त पहरे में रखा जाये और हर मुम्किन ज़ुल्म रवा रखा जाये।

अली बिन यारमश इमाम की अिबादत से इस दरजा मुतअस्सिर हुआ कि वह इमाम का सच्चा मुहिब हो गया और इमाम से मुआफ़ी तलब करके बड़े एहतिराम से घर वापस पहुंचा दिया और कहा कि बादशाह अगर मेरे इस अमल से नाखुश होगा तो मुझे उसकी परवाह नहीं मैं उसकी खुशनूदी पर खुदा की खुशनूदी को मोक़द्दम समझता हूँ।

मोअतज़ बिल्लाह को दुशमनी-ए-आले रसूल की बहुत जल्द सज़ा मिल गयी और रूमियों ने माज़ूल करके उसकी जगह मोहतदी बिल्लाह को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया। जिसने तख़्ते खिलाफ़त पर बैठते ही इमाम पर सख़्तियों का इज़ाफ़ा कर दिया और इमाम को सालिह बिन हनीफ़ की क़ैद में दे दिया जिसने इमाम की निगरानी के लिये गुलामों को मुतअय्यन किया जो इमाम को ईज़ा रसानी में कोई दक़ीक़ः उठा नहीं रखते मगर इमाम किसी बात की शिकायत न करते बल्कि अिबादत में मशगूल रहते बिलआख़िर सालिह के गुलामों की इमाम से मुख़ालफ़त मुवाफ़क़त में बदल गयी और वह सब इताअत का दम भरने लगे। एक दिन सालिह बिन हनीफ़ ने देखा कि उसके गुलाम इमाम के सामने मुवद्दब बैठे हैं। घर आकर उसने कहा कि अगर इमाम इसी तरह क़ैद में रहे तो तमाम गरोह शीआ हो जायेगा फिर मालूम नहीं क्या फ़ित्ना ख़ड़ा हो जाये। उसने इसी ख़्याल से इमाम को आज़ाद कर दिया।

मोहतदी से तुर्क नाराज़ हुए जिन्होंने उसको क़त्ल कर दिया तो मोअतमिद अब्बासी ख़लीफ़ा हुआ जिसने इमाम को नहरीर की हिरासत में दे दिया जो इमाम पर बहुत मज़ालिम करता जिसे देखकर उसकी बीवी से बरदाश्त न हुआ और उसने कहा कि यह फ़रज़न्दे रसूल हैं इन पर ज़ुल्म करके अपनी आख़िरत न बिगाड़ा नहरीर अपनी बीवी की बात सुनकर गुस्से में आ गया और कहने लगा कि ऐसे शख़्स के साथ हर्गिज़ कोई रिआयत नहीं कर सकता जिससे ख़लीफ़ः-ए-वक़्त नाराज़ हो और उसी दिन से और सख़्ती करने लगा और मोअतिमद से इमाम के ख़िलाफ़ इशतिआल अंगेज़ बातें की जिसको सुनकर मोअतिमद ने इमाम को दरिन्दों में डालने का हुक्म दे दिया। तामीले हुक्म भी हुई मगर जब मोअतमिद ने यह देखा कि तमाम दरिन्दे हज़रत के गिर्द जम्अ हो गये और इमाम शफ़क़त से सब पर हाथ फेर कर नमाज़ में मशगूल हो गये तो उसके पास इमाम को आज़ाद कर देने के सिवा चारा क्या था ?

कुछ अर्से के बाद मोअतमिद ने फिर इमाम को क़ैद कर लिया और इमाम की ईज़ा रसानी में कोई कसर न उठा रखी वह आपके क़त्ल के मन्सूबे बनाता रहा। खुम्स पर पाबन्दी लगा दी मगर जब कामयाब न हो सका तो उसने हज़रत को शहीद करने के लिये अपने गुलाम के हाथ ज़हर मिलाकर ख़ाना भेजा और कहा कि यह ख़ाना ख़ास तौर से आपके लिए तैयार किया गया है इसको ज़रूर तनावुल करें।

(बक़िया पेज न० 15 ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,)